आरती श्री पार्श्वनाथ स्वामी की

जय पारस देवा स्वामी जय पारस देवा।
सुर नर मुनि जन सव चरनन की करते नित सेवा। टेक।।

पौष बदी ग्यारस, काशी में आनन्द अति भारी।
अश्वसेन घर वामा माता के उर लीनों अवतारी।।
ॐ जय ।।१।।

श्याम वरण नव हस्थ काय पग उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहै।।
ॐ जय ।।२।।

जलते देख नाग-नागिन को मन्त्र नवकार दिया।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भानु प्रकाश किया।।
ॐ जय ।।३।।

मात पिता तुम स्वामी मेरे आस करूँ मैं किसकी।
तुम बिन दूजा ओर न कोई शरण गहूँ मैं किसकी।।
ॐ जय ।।४।।

तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अर्न्तयामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी।।
ॐ जय ।।५।।

दीनबन्धु दुःख हरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे।।
ॐ जय ।।६।।

विषय विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो जी दाता।
"सेवक" कर जोड़ प्रभु के चरणों में चित लाता।।
ॐ जय ।।७।।